# अकार

73

मूल्य-100 रु.

# गिरिराज किशोर की चयनित रचनाएँ

## साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित

## गिरिराज किशोर रचना संचयन

### चयन एवं संपादन : प्रियंवद

प्रथम संस्करण
मूल्य - 320 रु.

यह पुस्तक साहित्य अकादमी से प्राप्त कर सकते हैं।

# अकार

## विचारशीलता और बौद्धिक हस्तक्षेप का उपक्रम

सम्पादक
**प्रियंवद**

उप सम्पादक
**जीवेश प्रभाकर**

**वर्ष : 26 – अंक : 73**
**अप्रैल –2026**

यह अंक
**https://notnul.com**
पर उपलब्ध है ।

## अकार की सदस्यता संबंधी जानकारी–

| | |
|---|---|
| एक प्रति | - 100 /- रु. |
| वार्षिक सदस्यता (तीन अंक) | - 500/- रु. |
| संस्थागत वार्षिक सदस्यता (तीन अंक) | - 800/- रु. |
| तीन वर्ष की सदस्यता (व्यक्तिगत) | - 1200/- रु. |
| तीन वर्ष की सदस्यता (संस्थागत) | - 1800/- रु. |
| आजीवन सदस्यता (व्यक्तिगत) | - 3500/- रु. |
| संस्थागत आजीवन सदस्यता | - 5000/- रु. |

(पत्रिका के समस्त सदस्यता शुल्क में रजिस्टर्ड डाक खर्च सम्मिलित है।)

आप 'अकार' के लिये धन राशि अपने क्षेत्र के 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी ब्रांच में जमा करा सकते हैं। 'अकार' के खाते के ब्यौरे नीचे दिए जा रहे हैं। आप मनीष के मोबा. न. 9935058400 पर भी राशि भेज सकते हैं ।

Name of the Firm which Holds the bank Account :- AKAR PRAKASHAN
Bank Name :- Bank of Baroda, Bank Adress :- Panki, Site - 1, Kanpur - 208002.,
Bank Account No.- 09620200000089 MICR Code :- 208012012
IFSC Code :- BARB0PANKIX ( 0 is ZERO, NOT ALPHABETICAL O )

**प्रकाशक :** अकार प्रकाशन, B -204, रतन सैफ़ायर,16/70,सिविल लाइन्स कानपुर - 208001

**सम्पर्क :**
**प्रियंवद**
B -204, रतन सैफ़ायर,,16/70, सिविल लाइन्स कानपुर - 208001
ई मेल – priyamvadd@gmail.com (मो.) 9839215236

**जीवेश प्रभाकर :**
69/2113, रोहिणीपुरम -2, रायपुर-492001 (छ.ग.)
ई मेल - jeeveshprabhakar@gmail.com मो. - 09425506574

**आवरण :–** जीवेश प्रभाकर
**मुद्रक**
सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर, बीकानेर - 334003, फोनः - 0151-2242023
**कम्पोज़िंग**
विकल्प विमर्श, 87 निगम कॉलोनी, रायपुर - 492 001

सम्पादन व संचालन अवैतनिक । समस्त विवाद कानपुर न्याय क्षेत्र के अन्तर्गत होंगे । पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विचार सम्बन्धित लेखक के अपने हैं । सम्पादक अथवा प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

# अनुक्रम


1. **अकथ :** ज्ञानरंजन - *प्रियंवद* .................................................................... 06

2. **स्मरण :** देश के शीर्ष समाजवादी चिंतक-विचारक : सच्चिदानन्द सिन्हा
 - *वीरेन नंदा* ................................................................................ 14

3. **वक्तव्य :** मेरी रचनात्मकता : मेरे द्वंद्व - *मनोज रूपड़ा* .................................... 30

4. **वक्तव्य :** मेरी रचनात्मकता : मेरे द्वंद्व - *जया जादवानी* .....................................39

5. **वक्तव्य :** आधुनिकतावाद से सामना : मेरी सृजनात्मकता और उसके समक्ष चुनौतियाँ-
 *रणजीत दाश* ..........................................................................50

6. **लेख :** 'गोरा' में खचित समय की व्याप्ति - *गोपाल प्रधान* ..................................58.

**वक्तव्य :** मेरी रचनात्मकता : मेरे द्वंद्व - *जितेन्द्र भाटिया* .........................................69

8. **वक्तव्य :** मेरी रचनात्मकता : मेरे द्वंद्व - *दिव्या विजय* .......................................73

9. **वक्तव्य :** मेरी रचनात्मकता : मेरे द्वंद्व - *अविनाश मिश्र* .......................................82

10.**वक्तव्य :** मेरी रचनात्मकता और द्वंद्व - *राही डूमरचीर*.......................................88

11. **डायरी** : शांतिनिकेतन डायरी, 'संगमन' के दौरान - निहाल पाराशर .....................95

12. **रेखाचित्र** : शिव का ओंकार और सर जी – *शम्पा शाह* ...............................109
 (इंजोर साय और सरगुजा, छत्तीसगढ़ की माटी कला)

13. **कहानी** : आप बीती - *लोकमित्र गौतम* ....................................................118

14. **कविता :** नींद में जाता हुआ मनुष्य **:** *अमन त्रिपाठी* ......................................127

10. **लेख :** पारंपरिक सिने कथाओं से आगे, सिनेमा की नयी ज़मीन : *जितेन्द्र भाटिया*
 (स्मृतियों में सिनेमा-9) ..................................................................132

# ज्ञानरंजन

**ज्ञा**नरंजन पर कभी भी बात की जा सकती है, उसी तरह, जिस तरह बारिश, चिड़ियों, कविता, राजनीति या मनुष्य पर ।

'अकार' पर ज्ञानरंजन का ऋण है। 'पहल' की दो पारियों के बीच के वर्षों में 'अकार' जबलपुर में, ज्ञानरंजन की देख-रेख में छपा था। उन्होंने पत्रिका की कम्पोज़िंग से डिस्पैच तक सारा काम, बेहद जिम्मेदारी, संलग्नता व निजी सरोकार के साथ किया था, बग़ैर किसी हस्तक्षेप, बग़ैर किसी रचना पर कोई बात किए और बग़ैर कोई अहसान जताते हुए। उनको लिखे 17 लेखकों के पत्रों की किताब के पहले खंड 'खतों के आईने में' दी गयी भूमिका में यह पूरा प्रसंग विस्तार से लिखा जा चुका है। विभिन्न समय, आयु और सरोकारों वाले इन तमाम लेखकों के पत्रों को पढ़ने के बाद, अपने समय और साहित्य पर ज्ञानरंजन और 'पहल' के प्रभाव के बारे में, तटस्थता से सोचने का एक अवसर मिला । दोनों के ही कुछ नए पहलू भी खुले । इनमें कुछ अच्छे थे, कुछ बुरे भी । जैसा भी था, हम सब जानते हैं, समय के साथ 'कहानीकार' ज्ञानरंजन कथा साहित्य के नेपथ्य में चले गए। 'पहल' पत्रिका ही फिर ज्ञानरंजन की साहित्यिक व वैचारिक पहचान, अभिव्यक्ति और उनका जीवन कर्म बनता चला गया ।

दोनों खंडों में प्रकाशित होने वाले लगभग अस्सी लेखकों के, और अप्रकाशित सैकड़ों पत्रों को पढ़ने के बाद, यकीनी तौर पर ज़ाहिर हो जाता है कि 35 वर्षों की अपनी पहली पारी में, 'पहल' हिंदी व ग़ैर हिंदी भाषाओं के साहित्य जगत में, अपनी साहित्यिक और ज्ञानरंजन की व्यक्तिगत उपस्थिति के साथ हमेशा महत्त्वपूर्ण और प्रभावी भूमिका में रही। इसी के साथ वामपंथी रचनात्मकता के श्रेष्ठ मापदंडों व मूल्यों के संवर्धन, संरक्षण और अभिव्यक्ति के रूप में भी स्वीकृत रही। 'पहल' ने सिर्फ साहित्यिक नहीं, बल्कि प्रगतिशील और वैचारिक स्तर पर भी, हिंदी समाज को बहुत आगे तक ले जाना चाहा।

इन सबके लिए उसने समय समय पर 'पहल' के कई विशेषांक निकाले। 'मार्क्सवादी सौन्दर्य शास्त्र अंक', 'इतिहास अंक', 'बांग्ला देश साहित्य अंक' 'अफ्रीकी साहित्य अंक', 'जम्मू कश्मीर साहित्य अंक', 'पाकिस्तानी उर्दू कलम अंक,' 'वाल्टर बेंजामिन अंक', दो कहानी अंक, दो कविता अंक आदि इसी क्रम में थे । इन विशेषांकों के साथ 'पहल' ने अपने समय में सीधा हस्तक्षेप किया । उसके साथ कभी मुठभेड़ की, कभी उससे संवाद किया और कभी उसकी उलझी गांठों को खोलने की कोशिश की । हर स्तर पर 'पहल' ने अपने विचार, अपनी पक्षधरता, पूरी स्पष्टता के साथ उच्च स्वरों में घोषित की। सामान्य अंकों के ही बीच कई 'पहल' पुस्तिकाएं भी निकलीं। ये कम पृष्ठों की, किसी निश्चित विषय या विचार या रचना पर एकाग्र होती थीं। हालाँकि इनके प्रकाशन के पीछे विज्ञापनों द्वारा आर्थिक लाभ का एक पक्ष भी होता था, पर क्योंकि लघु पत्रिकाओं के लिए आर्थिक संकट हमेशा बना रहता था, इसलिए 'पहल' पुस्तिकाओं का प्रकाशन इसमें दिए गए विज्ञापनों द्वारा पत्रिका के प्रकाशन में मदद करता था । इनके अलावा 'पहल व्याख्यान माला', 'पहल सम्मान', 'पहल यात्राएं', 'पहल पोस्टर वर्कशॉप' जैसी दूसरी गतिविधियाँ भी चलती रहती थीं। इन सारे कार्यक्रमों का निचोड़ और महत्त्व यह था, कि राष्ट्रीय स्तर पर, विभिन्न भाषाओं और विधाओं के रचनाकार, अपनी रचना धर्मिता और वैचारिकता के साथ 'पहल' के रूप में एक साझा मंच बनाते और आपस में संवादरत रहते थे ।

ज़ाहिर है, इतने व्यापक स्तर पर लगभग 35 वर्षों तक सक्रिय रही पत्रिका 'पहल', और हिंदी साहित्य में हर समय, हर रूप में उपस्थित दिखने वाले व्यक्ति ज्ञानरंजन को, हिंदी की हर पीढ़ी की रचनात्मकता और वैचारिकता से भी जुड़ना ही था। उसके लिए खाद-पानी बनना ही था। 'पहल' में भारतीय और विदेशी भाषाओं के अनुवाद भी निरन्तर छपते रहे। विजय कुमार, सुरेश सलिल, वीरेन्द्र कुमार बरनवाल के अधिकांश पत्रों में विदेशी कवियों के अनुवादों का ही ज़िक्र है । कुछ ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय विषयों का भी ज़िक्र है जिन पर उन्हें लगता था 'पहल' का अंक आना चाहिए । यही कारण था, 'पहल' अपने समय की अकेली हिंदी पत्रिका बनी, जिसमें गैर हिंदी भाषा के लेखक भी गहरी रुचि रखते थे । उसमें छपना चाहते थे । हिंदी की कई महत्त्वपूर्ण कहानियाँ, कविताएं और कई युवा लेखक भी, अपनी पहली रचना के साथ यहाँ छपे। 'पहल' ने लघु पत्रिका संगठन व आंदोलन में भी शुरू में महती भूमिका निभायी। कलकत्ता में हुए लघु पत्रिकाओं के सम्मेलन में, ज्ञानरंजन ने लम्बा और जोशीला भाषण दिया, लेकिन यह विचार और आंदोलन दूर तक नहीं चला। अलग अलग छोटे शहरों और कस्बों से निकलने वाली पत्रिकाएं, एक मंच बना कर संगठित नहीं हो सकीं । ज्ञानरंजन शुरू में जरूर इस योजना और आंदोलन में उत्साही और सक्रिय दिखे, पर बाद में ठंडे पड़ गए । विजयकांत, शम्भुनाथ, शंकर और सुधीर विद्यार्थी के पत्रों में, इस संगठन में ज्ञानरंजन की भूमिका के बारे में कुछ सूचनाएं, कुछ जानकारियाँ दी गयी हैं। सुधीर विद्यार्थी को लिखे ज्ञानरंजन के

पत्रों में, से एक पत्र में, लघु पत्रिकाओं के बारे में ज्ञानरंजन का बदला और लगभग इनके विरोध का स्वर हैरान और परेशान करता है।

जो था, पर ज्ञानरंजन और 'पहल' के बन चुके आभामंडल की बुनियाद, ज्ञानरंजन की शुरूआती कहानियों में ही थी। पाठक इस आभामंडल तक वाया 'घंटा', 'बहिर्गमन' 'पिता','अमरूद का पेड़', 'फेंस के इधर और उधर' 'अनुभव' ऐसी ही कुछ और कहानियों तक पहुँचता था। साठ के दशक में ज्ञानरंजन की कहानियाँ एक धमाके की तरह आयीं। उन्हें पढ़कर लोगों पर वज्द जैसा तारी हो गया। इन कहानियों के जादू या कहें तिलिस्म से उस समय का शायद ही कोई लेखक या पाठक, खासतौर से युवा, बचा हो। इन कहानियों से फूटता आक्रोश, इनमें झलकता अपने वर्तमान का सम्पूर्ण अस्वीकार या तिरस्कार, भाषा की संगीतमय तोड़-फोड़ और निरकुंश अभिव्यक्ति की आक्रामकता हिन्दी का नया स्वर था। साठ के दशक के विश्वव्यापी छात्र आंदोलन की बेचैनियाँ,उत्तेजना, उग्रता और विद्रोह का भी यही समय, स्वर और तेवर था, जो अपने चारों ओर का सब कुछ ध्वस्त कर, नया कुछ गढ़ने की जिद और ख़्वाहिश से भरा था। ज्ञानरंजन की कहानियाँ, छात्रों की युवा पीढ़ी के इन तेवरों से जुड़ती थीं। देश में नक्सली उभार का यही दौर था। हिंदी पट्टी में भी यह तेजी से जगह बना रहा था। चारु मजूमदार और कानू सान्याल के नाम युवाओं के बीच नायकों की तरह लिए जाते थे। कास्त्रो और चेग्वारा विश्व के असंख्य युवाओं के आदर्श बन चुके थे। उनकी तरह दाढ़ियाँ, कपड़े, कैप, वक्तव्य, नारे, उनके संघर्ष, उनकी रचनाएँ युवाओं का प्रेरणा स्त्रोत बन चुके थे। ज्ञानरंजन की कहानियों में भी युवाओं को यह सब मिल जाता था। उनकी कहानियों में वामपंथी प्रतिबद्धता, पूंजीवादी सभ्यता और स्वार्थी समाज के प्रति लगभग घृणा का भाव दिखता था। हिंदी कहानियों में ऐसा आक्रोशित और ध्वंसात्मक स्वर पहले कभी नहीं सुना गया था। 'नयी कहानी' की तिकड़ी को अतिक्रमित करने वाली ज्ञानरंजन की इन कहानियों ने, उनके लेखक के ईद-गिर्द एक ऐसा तिलिस्म रच दिया, जो अन्ततः ज्ञानरंजन के कहानीकार को अपने अंदर खींच कर उसे खा गया। लेकिन ज्ञानरंजन का यह कहानीकार समूल खत्म नहीं हुआ, पर उसने दिशा जरूर बदल ली। 'पहल' के रूप में वह अधिक वैचारिक दृढ़ता और स्पष्टता, अधिक चैतन्य सक्रियता, अधिक प्रखर और अधिक प्रतिबद्धता के साथ, अपने समय में मनुष्य के पक्ष में लड़ी जा रही लड़ाइयों में, उसकी तरफ से शामिल हो गया। 'पहल' ने ज्ञानरंजन के 'कहानीकार' की हर महत्त्वाकांक्षा और उद्देश्य को, अधिक बेहतर ढंग से पूरा किया। कहानीकार ज्ञानरंजन को और क्या चाहिए था?

000

ज्ञानरंजन के ऐसे आभामंडल बनने के पीछे, कहानियों के अलावा उनके व्यक्तित्व का भी एक बड़ा हिस्सा था। पूंजीवादी समय, स्वार्थी मध्यवर्गीय समाज और क्रूर राज्य व्यवस्था से लड़ने की उनकी दिखती प्रतिबद्धता, प्रत्यक्ष जुझारूपन, निजी बातचीत में भी